Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल की धड़कन

दिल की धड़कन

R
८१-४
स्याल-दि

सुखदेव कुमार स्याल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

આચાર્ય વર સ્વતંત્ર કુમાર જી,
કુલ પતિ, ગુરુકુલ કાંગડી વિશ્વવિદ્યાલય,
કાંગ્રેસ મંદ

સુરદેવ
16.5.07

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रो० स्वतंत्र कुमार, कुलपति
द्वारा प्रदत्त संग्रह

दिल की धड़कन

कविता-संग्रह

लेखक :

सुखदेव कुमार स्याल

पुस्तकालय
127878
गुरुकुल कांगड़ी विश्व

प्रकाशक :

सोमा सदन

130-बी, न्यू किचलू नगर, लुधियाना-141008

127878
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक :

सोमा सदन

130-बी, न्यू किचलू नगर, लुधियाना ।

लेखक :

सुखदेव कुमार स्याल

74-बी, न्यू किचलू नगर, लुधियाना-141008

67.4
स्याल-वि

मूल्य : 75/- रूपये

प्रकाशन काल

मार्च, 2007

मुद्रक :

पी.एल. प्रिंटर्ज़

24, भदौड़ हाऊस, लुधियाना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी कलम से

हिन्दी काव्य-मन्दाकिनी वीरगाथा काल की तलवारों और भालों की खनखनाती हुई सीमा को लांघकर, भक्तिकाल के धार्मिक बवण्डरों को झेलती हुई, रीतिकाल की रसपूर्ण गगरी लिए, आधुनिक युग में समाज-सुधार, देश-प्रेम, छायावाद, मानववाद, दु:खवाद, हालावाद, गांधीवाद, प्रगतिवाद आदि विचार धाराओं की धरती को सींचती हुई, वर्तमान युग तक धीर मंथर गति से इठला कर चलती हुई पहुँच गई है। वर्तमान युग के आरम्भिक वर्षों में इस पर एक नया पुल बना था 'प्रयोगवाद' का, जिस पर खड़े होकर 'अज्ञेय एण्ड कम्पनी' ('तार सप्तक' और 'दूसरा सप्तक' के कवि) ने मानव की 'कुंठित' एवं 'दमित' वासनाओं के छोटे-छोटे कंकर-पत्थर इसमें फैंके थे। कंकर-पत्थरों के फैंकने से इसमें लहरें उत्पन्न हुई थीं, उत्पन्न होकर गिर गई थीं किंतु पूर्णतया लीन नहीं हुई। उनकी सलवटें अभी भी सतह पर स्पष्ट दृष्टि-गोचर होती हैं यद्यपि स्वतंत्रता-सूर्य की प्रखर किरणों के आलोक में उन का प्रकाश कुछ मंद पड़ गया है, आभा कुछ हल्की और फीकी हो गई है।

वर्तमान युग राजनीतिक झंझावात का युग है। विश्व की शतरंज पर राजनीतिक मोहरे युद्ध करने में कुछ ज्यादा ही सचेत दिखाई देते हैं। एक ओर अणु शक्ति से लैस विध्वंसक एवं आतंकी शक्तियाँ हैं, तो दूसरी ओर है सुख और शांति का आंचल थामे हुए माँ-भारती की गोद में बैठी 'सुख की देवी'। जीत 'सुख की देवी' की ही होगी, जगत् में फैली विध्वंसक एवं आंतकी शक्तियों की नहीं।

ऐसी विकराल परिस्थिति में 'दिल की धड़कन' हिन्दी जगत् के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ। इसमें कोई नवीन जीवन दर्शन नहीं है। सहज, सरल एवं स्वाभाविक भाव हैं जो समय-समय पर मन को आलोड़ित कर कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहे हैं। उनमें किसी 'वाद' की झलक स्वाभाविक रूप से भले ही आ गई हो, लिखते समय तो मेरे मन में ऐसा कुछ आया नहीं।

(लुधियाना, नवम्बर, 1955)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनश्च :

उपरोक्त लेखन इक्यावन वर्ष पूर्व का है । उसकी सार्थकता उसी संदर्भ में देखें ।

कविता कालातीत है । प्रत्येक युग में वह तरोताज़ा है ।

Better late Than Never अर्थात् कभी नहीं की अपेक्षा देर भली की भावनाधीन यह कविता-संग्रह अब साहित्य जगत की भेंट कर रहा हूँ।

आभार :

मैं अपने परम मित्र स्वर्गीय मास्टर प्यारे लाल जी के होनहार सुपुत्र प्रिय राकेश गुप्ता, प्रोप्राईटर, पी.एल, प्रिंटर्ज़, लुधियाना, के प्रति आभार प्रकट करता हूँ । प्रिय राकेश के अपूर्व सहयोग और मुद्रण-कौशल की बदौलत ही 'दिल की धड़कन' का प्रकाशन वजूद में आया है ।

लुधियाना, मार्च 2007

सुखदेव कुमार स्याल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पण

'दिल की धड़कन' को
जिसकी मधुरिमा
आज भी संजोये
बैठा हूँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

कविता क्रम		पृष्ठ संख्या
1.	दिल की धड़कन	1
2.	एकाकीपन का भार	2
3.	ऐ दिल पागल	3
4.	रहस्यमयी छवि	4-8
5.	वह निकला चाँद	9-10
6.	कमलिनी	11
7.	रंगीला	12
8.	सेज पिया की	13
9.	दुनिया की अतुल रँगीनी	14-15
10.	राही	16
11.	आशा के घरौंदे	17
12.	मानस के विहग	18
13.	जब तारे जगमग करते हैं	19-20
14.	दूल्हा न्यारा	21-23
15.	सुख की देवी	24-25
16.	मेरा सपना टूटा	25
17.	दो जीवों के सहारे	26
18.	विश्व-परी	27
19.	जब याद तुम्हारी आए साथी	28
20.	घंटा घर	29-31
21.	मैं अकेला	32
22.	चाँद कहता	33
23.	कोई गीत सुनाता आ जाए	34
24.	रँगीन मोती	35
25.	जीवन सरिता	36
26.	मेरी आत्मा	37
27.	प्यार का अनमोल मोती	38
28.	छाया हर्ष अपार	39
29.	बापू के प्रति	40

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल की धड़कन

मेरे दिल की धड़कन प्यार भरी,
हंसती बलखाती जाग अरी ।

सपनों की मेरे रानी है
सोलह श्रृंगारों से सज्जित
भावों के झरनों में बहती
कल कूजन में रहती मज्जित ।

सोने की नैया में बैठी,
तू है अनंत सुहाग भरी !

सागर में प्रतिपल रह रह कर
लहरों की तरह उठती गिरती ।
शशिमुख को आंचल में भर कर
तारों से हंस हंस जा मिलती ।

चाँदी के रथ पर चढ़कर तू,
जाती अमरों के देश परी !

पर्वत की ऊँची चोटी पर,
मानस की धारा में घुलमिल
सब दुःख मानव का हरने को
बढ़ती सिंधु की ओर आकुल ।

सुख की देवी बनकर है तू,
हर मानव का संताप चली ।

तुझको सोते युग बीत गए
मानव सब कुछ है जीत गया ।
पापों का, अत्याचारों का,
वह काल अंधेरा बीत गया ।

उठ, देख, प्रात की लाली में,
उषा-नगर संकेत भरी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकाकीपन का भार

एकाकीपन का भार लिए
उड़ जाऊँ मैं नभ-मंडल में,
या जीवन-सरिता को लेकर
मिल जाऊँ मैं भव-सागर में ?

कुछ नहीं समझ में आता है
दिल यों ही डूबा जाता है
इस दिल को संभालूँ क्यों कर
यह मन में नहीं समाता है ।

दुनिया कहती मुझको पागल
मैं पागल से हूँ नहीं परिचित
फिर दुनिया को क्या समझाऊँ
यह मुझे नहीं है स्वयं विदित ।

आते दुःख के बादल घिर-घिर
औ' छा जाते जीवन-पथ पर,
कैसे उनसे बच पाऊँ मैं
यह नहीं समझ पाता फिर-फिर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐ दिल पागल

दुनिया है सब आनी-जानी
भूल जा इसको ऐ दिल पागल ।
नहीं है इसमें कोई अपना
दु:ख से है सब भव-जन आविल ।

अपना-अपना कहता जिसको
और किसी का हो जाता ।
पर तू इस पर ध्यान न देकर
जोड़ उसी से अपना नाता ।

एक दिवस आएगा जब तू
उस पर अपना अधिकार जमाना ।
उसकी जींवन आभा को ले
सागर में उससे मिल जाना ।

सागर में उठती हैं मौजें
उठतीं और फिर बैठ हैं जातीं ।
एक बार जब बैठ गईं तो
फिर उठ कर हैं घिर-घिर आतीं ।

दुनिया का क्रम यही है पगले
क्यों तू इसको भूल गया ?
मैं हूँ तेरा, तू है मेरा
यह है नहीं कोई रूप नया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहस्यमयी छवि

१

मैं फिरता था एकाकी
विस्तृत जग के आंगन में
आकर तूने मुझे भर लिया
अपने सुख के दामन में ।

अब हम दोनों हैं एक
एक जैसे तारक-आकाश
विद्युत के अमित कणों में जैसे
मंद ढुलकता है प्रकाश ।

२

जीवन की सरिता बह निकली
कल-कल करती, छल-छल करती
मैं मद का लोभी भूल गया
दुनिया बनती दुनिया मिटती ।

मैं सोया था अब जाग उठा
दुनिया ने मुझ को जगा दिया
मैं लोभी था कुछ पा न सका
दुनिया ने मुझे पाने न दिया ।

मैं दुनिया को फिर जानूँ क्यों ?
इसका कुछ भी डर मानूँ क्यों ?
वह अपने पथ पर चलती है,
मैं अपने पथ पर चलूँ न क्यों ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं ने दुनिया से क्या पाया ?
उसने मुझको क्या दिखलाया ?
मेरा जो था वह भी छीना
दु:ख-दर्द से मुझे किया झीना ।

दु:ख-दर्द की सरिता लहर-लहर
बढ़ती जाती निश्चल-निश्चल
उस आकुल प्रेमी से मिलने
जिसकी छवि बनती है पल पल ।

पल-पल बनकर मिटती जाती
जीवन-पट में खोती जाती
इस विरह-व्यथा के जीवन में
हंसने आती रोने आती ।

रोकर भी तू पायेगी क्या ?
आयेगी मेरे पास तो क्या ?
मैं भ्रमा-भ्रमा सा बैठा हूँ
तू भ्रम ही ले जाएगी क्या ?

भ्रम से भी बनेगा क्या तेरा ?
कब कहाँ मिलेगा तुझे बसेरा ?
मेरा, री अरी, यह विभ्रम मन
पा सका न अब तक भला सबेरा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३

वह आई जब मुझ से मिल ने
मैं सोया था सूने जग में
जागा, तो वह मुंह मोड़ गई
इक टीस मधुर-सी छोड़ गई ।

वह मधुर टीस अब तड़पाती
मन में सुंदर दीप जलाती
दीपक की लौ देती ज्वाला
दे ताप बनाती मतवाला ।

मैं उससे मिलने को आतुर
इस जीवन में जो क्षण-भंगुर
मैं उसका पता लगाऊँगा
जीवन में उसको पाऊँगा ।

आई जो सपने में मेरे
डाले जो उसने फिर फेरे
उसका पीछा करता करता
नीलाम्बर में खो जाऊँगा ।

नीलाम्बर है उसका शुभ घर
जो छवि से उसकी मधुर-मधुर
देता मेरे गीतों को स्वर
कुछ मंद मुखर कुछ सहज प्रखर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये गीत बड़े हैं दर्द भरे
जिनमें करूणा के भाव बहे
वे भाव जो मुद्रित हो घन में
मिलते उससे जा सावन में ।

सावन आता है मदमाता
उसका संदेश सुना जाता
"तू दुनिया में उलझा पगले
सब सपने हैं तेरे झूठे ।

"आ, तू आकर मुझसे मिल जा
मेरी गगरी से रस ले जा
तब गीत बनेंगे ये सुंदर
जो देंगे तुझको शांति अमर ।"

मैं उससे मिलने जाऊँगा
जीवन को सफल बनाऊँगा
उसकी मधुरिम आभा को ले
भव-सागर को तर जाऊँगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४

मैं उसे गया था मिलने आज ।
पलकों की ओट में लुके-लुके
तारों की छवि में छिपे-छिपे
जाने वह कहाँ चली गई
चुपके-चुपके इस पिछली रात ।

मैं थका-थका-सा बैठ रहा
कुछ चिंतित-सा उस आँगन में
झपकी आई फिर आँख लगी
देखा उसको फिर सपने में ।

मैं उठा उसे बुलाने तब
वह और दूर कुछ चली गई
मेरी चेतनता औ'' जड़ता
मानो उससे कुछ छली गई ।

वह क्यों आती यों सिहर-सिहर
उठती गिरती-सी लहर-लहर
क्या उसे नहीं कोई और ठौर
जो यूं आती मेरे मन रौर ?

आती तो फिर जाती है क्यों ?
अपना कुछ भी न बताती क्यों ?
क्या मुझको पागल समझा है
जो मुझसे लुकती-छिपती यों ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह निकला चाँद

वह निकला चाँद उखड़ा-उखड़ा
तारावलि उससे बिछुड़ गई
फीका-पीला उसका चेहरा
स्नेहमयी किरन भी छूट गई ।

दुबला-पतला-सा बढ़ रहा
ढीला-ढीला बादल की ओट
मुख मलिन, मुद्रा गम्भीर
जायेगी मानो पवन चीर ।

उसके आँसू कोमल-कोमल
फूलों पत्तों की शय्या पर
निर्मम रवि अपनी भट्टी में
बलपूर्वक है झुलसा देता ।

दीन-हीन वह बेचारा
उसका भाग्य मंद-तारा
नियति-चक्र में बंधा-बंधा
फिरता नभ में मारा-मारा ।

ताक रहा इस जन-भू को
इंगित करता मुझको देखो
प्रिया का भिक्षुक दुःख का राजा
बिन साथी सिर धुनता अभागा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई जो उसको सहलावे
गम को उसके हर ले जावे
भर कर उसको निज गोदी में
यों गीत व्यथा के फिर गावे ।

"तू क्यों उदास होता चन्दे
रो-रो कर क्षीण होता चन्दे
मैं आया तेरे पास देख
तेरा चुबंन लेने चन्दे ।

"कोई आवे न आवे चाहे
कवि ही तेरा साथी चन्दे
तेरी वेदना उसकी वेदना
बन, तड़पाती उसको चन्दे !

"जब तक मानव में विरह-ताप
जब तक उसमें अंतिम श्वास
कवि तेरे विरह में मग्न हो
तेरे गीतों को गायेगा -
तू क्यों म्लीन होता चन्दे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमलिनी

कमलिनी तेरे लिए
देख हुआ सुप्रभात ।
प्रियतम द्वारे पर खड़े
आ मिल उनके साथ ।

निंदिया सपनों की ढल गयी
बीत गई वह रात ।
अँगड़ाई ली है रवि ने
अब क्यों तू चुपचाप ?

नहीं बनाना कोई बहाना
नहीं दिखाना कोई अंदाज ।
वह तो तेरे ही हैं पगली
उनसे छिपा न कोई राज़ ।

सोना बस अब तुझे नहीं है
उठना ही है तुझको आज ।
तू उनकी हो जायेगी फिर
क्यों खेले मुख पर यह लाज ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंगीला

मैं रंगीला कहाँ से आया ?
किसने मेरे तारों को छूकर
गीत मधुर संगीत-सा गाया ?

है कौन रूप-राशि वह जिसने
मेरा अनुपम चित्र बनाया ?
स्वर्णमयी आभा से जिसने
मेरे गीतों का साज़ सजाया ?

साज़ बज रहा कुछ रूक-रूक कर
मानो टूट रहा कोई स्वर ।
अथवा कोमल पतली उँगली
गिर उठती हो सिहर-सिहर ।

सिहरन मेरी जीवन-साथी
तम में मुझको पथ दिखलाती
मिट कर मेरी फिर हो जाती
जीवन-नद में घुल मिल जाती ।
किसका मैंने मन भरमाया ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेज पिया की

रात आई, सेज पिया की सज गयी ।
मैं अनजानी, भूली-भूली पथ से अपने बिछुड़ गयी ।

रात अंधेरी, दूर उजाला,
प्रिय का पथ आलोकित करता ।
बह-बह नीर मेरी आँखों से
सजल धवल झरना-सा बनता ।
उमड़-घुमड़ घिरती वह बदरिया
सहसा रो-रो सो गयी ।

सोते-सोते देखा सपना
प्रिय बैठे थे अपने अँगना ।
सेज निकट थी सूनी पड़ी
उस पर फूलों की माला धरी ।
मेरी उत्सुक वह पिय की नज़रिया
देख-देख मैं खो गयी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनिया की अतुल रँगीनी

दुनिया की अतुल रँगीनी देखो,
क्षण भर को जग वालो तुम भी ।
फूलों की क्यारी सींचनी सीखो,
क्षण भर को जग वालो तुम भी ।

बगिया में तुम्हारी फूल खिले
नित नए निराले रंग लिए ।
भंवरों की भाँति उन पर तुम
कुछ झूम-झूम गुंजार करो ।

वीणा के तुम्हारी तार हिले
सुंदर कोमल कुछ राग लिए ।
रागों की ध्वनि भर कर मन में
उनसे खुलकर अभिसार करो ।

नदिया में तुम्हारी लहर उठी
उठ कर उसमें फिर लीन हुई ।
लहरों के उठने-गिरने को
मन-मंदिर से तुम प्यार करो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आई बसत-ऋतु इठलाती

अमृत कलियों में छलकाती ।

कलियों की सुन्दरता को ले

अपने तन का श्रृंगार करो ।

तारों की बिखरी सेज ऊपर

चाँद आया चाँदनी को लेकर ।

उनके आलिंगन-चुंबन को

तुम अपने गले का हार करो ।

मैं अतुल रँगीनी देख चुका

फूलों की क्यारी सींच चुका ।

आओ, तुम भी अब साथ चलो

उस प्रिय से लाड-दुलार करो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राही

पथ पर बढ़ता जाता राही
मंज़िल उसकी दूर कहीं ।
श्रांत-क्लांत जीवन है उसका
थक कर भी वह चूर नहीं ।

सूनी-सूनी है उसकी डगर
पर भरे-भरे हैं सारे नगर ।

वह फिर भी बढ़ता ही जाता
अविरल गति से चलता जाता ।

ठहरेगा अपनी मंजिल पर
चमकेगा चँदा जब मूभ पर ।

दुनिया का होकर, दुनिया से
वह पल भर को भी दूर नहीं ।
श्रांत-क्लांत जीवन है उसका
थक कर भी वह चूर नहीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशा के घरौंदे

मेरी आशा के घरौंदे, मेरे सपनों के सितारे ।
मैं हूँ प्यार तेरा, रो-रो, क्यों मुझको पुकारे ?

मेरी धड़कन, मेरी उलझन, मेरी गमगीन-सी रातें,
भावों की भंवर में, मेरे सपनों की बरातें,
रो-रो कर, गिर-गिर कर, फिर तुझकों पुकारें ।

वे प्यार भरी लज्जित मुस्कानों की लहरें,
शशिमुख पे तेरे घूँघट की भाँति जो फहरें,
उनकी छवि छिद्रित मेरे मन को दुलारे ।

मैं विहग तेरे नीड़ का, मधुऋतु का साथी,
पतझड़ की उदासी मुझे आ आ के सताती,
दुनिया में हूँ मैं जीवित बस तेरे सहारे ।

जीवन-तरी लहरों की लपेटों में डुबाती,
तकदीर भी मेरी न मुझे आके बचाती,
रो-रो क्यों अब दूर हुआ जाता किनारे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस के विहग

धरती से इक विहग उड़ा,
आकाश में ऊँचे चढ़ता जाता ।
अपनी दुनिया को भूल-भूल
तारों में प्रतिपल खोता जाता ।

तारों की दुनिया निराली है,
उसमें विहगों का वास नहीं ।
वह पागल फिर बढ़ता जाता,
उसको कोई सोच विचार नहीं ।

पर थक जायेंगे जब उसके,
धरती पे लुढ़कता आएगा ।
जब गहरी चोट लगेगी उसे
दुनिया का पता तब पाएगा ।

दुनिया को कब किसने जाना ?
किसने उसको है पहचाना ?
वह चोट लगाकर हंसती है,
पीछे पड़ता है पछताना ।

इस पछतावे को क्यों पाए,
ऐ विहग मेरे मानस के
यह धरती ही तेरी है
तू इस पर ही रह जा पगले ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब तारे जगमग करते हैं

जब तारे जगमग करते हैं
भावों के स्वर्णिम मंदिर में
मन के सतरंगो से सज्जित
सौंदर्यलोक में पली हुई
प्रिया की अनन्यतम प्रतिमा को
चँदा से घुलमिल क्रीड़ा करते
सुहाग की बिंदिया लिए हुए
उर में साकार बनाता हूँ ।

जब तारे जगमग करते हैं ।
सागर तट पर बैठा-बैठा
लहरों के घुल-मिल गिरने को
बालू-कण के आलिंगन को
प्रिया की प्रतिमा में अंकित कर
कुछ गीत सलोने गाता हूँ ।

जब तारे जगमग करते हैं ।
वह चौंक उठती है सपने में
गीतों की लय-सी चकित हुई
तन को अंगड़ाई से भर कर
मेरी स्मृति से भ्रमित हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धीरे-धीरे वह बढ़ती है
संभल-संभल कर, धरक-धरक कर,
संकेत भरे गुपचुप नयनों से,
लज्जा से छिपती, मुंह फेरती,
मोती-सी सस्मित मुस्कानों से
आ चुपके से मिल जाती तब
सागर तट बैठे प्राणों से ।

जब तारे जगमग करते हैं ।

वह प्रणय भार से लदी हुई,
भावी सपनों के चिंतन के
गोरख धंधे में उलझी हुई,
पल भर की सुख की यादों के
महलों में गम से बंधी हुई,
वह प्रिय गोद में छिप जाती
वर्षा की लड़ियों की भाँति
अपनी धरती से मिल जाती ।

तारो ! तुम जगमग रहो विश्व में
अनन्त काल तक जगमग करते ।
मेरी झोली को सदा रहो तुम
सुंदर कोमल भावों से भरते ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूल्हा न्यारा

आज बादल गा रहे हैं,
मद भरे सुख के तराने ।
आज लहरें नाचती हैं,
सिंधु मंडप को सजाने ।

व्योम-कांति झुक रही है,
प्यार की प्रतिमा बनी-सी ।
वायु चंचल लुक रही है,
चाँद की प्रियतमा बनी सी ।
गा रहा बह्मांड सारा,
वेद के मंत्र पुराने ।
चल रहा हूँ मैं, प्रिये, आज
प्यार से तुमको ब्याहने ।

उर छलक जाता है पल-पल,
भाव सोते जागते है ।
श्वास रह-रह कांप जाते,
प्यार तुमसे माँगते हैं ।
दे भी दो न प्यार कुछ-कुछ
आज आया मैं बुलाने ।
प्यार से रूठी हुई को
आज आया हूँ मनाने ।

पुस्तकालय
147818

सोचता हूँ अब खिलेंगी,
प्यार की वे कलियाँ सुंदर ।
जल उठेंगे दीप मेरे,
तारों से छूकर निरंतर ।
भस्म होंगे तारे शत-शत,
दीपों को मेरे, जलाने
प्यार के पथ को आलोकित
अपनी ज्योति से बनाने ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ रहा वह चित्र प्रिये का,
आँसुओं में तैरता-सा ।
लाज आंचल में छिपाए,
सिसकियों में बैठता-सा ।
सिसकियां क्यों भर रही तू,
आया मैं तुझको लेजाने ।
सोने के तारों से सज्जित
इक नए घर को बसाने ।

सोच, क्यों तू खो रही है,
मेरे उर की रश्मियों में ।
सोच, क्यों तू सो रही है,
सिंधु तट की उर्मियों में ।
उर्मियां मस्ती में आ-आ,
गा रहीं मधु गीत सुहाने ।
रश्मियाँ उर की मचलतीं
चल रहीं तुझ में समाने ।

देख, परियां फिर रही हैं,
मेरा सेहरा गूंथने को ।
देख, कलियां खिल रही हैं,
तेरा चेहरा चूमने को ।
शलभ की मधु-मस्तियों से,
देख, लगी वह लौ लजाने ।
पवन के झोंकों से झंकृत,
देख, लगी वह आज गाने ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाओ, गाओ, गीत गाओ,
प्यार के सब साथ मिलकर ।
आओ, आओ, साथ आओ,
सब चलें तितली-से सजकर ।
इंद्र भी वह आ रहा है
आज अपना ब्याह रचाने ।
मेरी आशाओं की विहगी
बढ़ रही इक नीड़ बनाने ।

जाओ, घी के दीप जलाओ,
जग के आंगन में बिखरकर ।
दूल्हा बनकर जा रहा हूँ,
चाँदनी-सा मैं निखर कर ।
चाँद शर्माता-हुआ सा,
उठ रहा मेरे साथ जाने ।
काले तिल को साथ लेकर,
नज़र से मुझको बचाने ।

डोलता है सिंधु-मंडप,
कांपता है वह बेचारा ।
भार न मेरा सह सकेगा,
मैं प्रिये का दूल्हा न्यारा ।
गूंज उठेगी लहरियां फिर
उस प्रिये के पास ले जाने ।
ताक रही जो अनंत-पथ से
चाह रही मुझको पहचाने ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख की देवी

सुख की देवी आ रही है
आज मानव को बचाने ।
उसकी कोमल लहरियों को
प्यार से सुख से सजाने ।

सोचती वह आ रही कुछ
फूलों पत्तों डालियों पर ।
खोजती वह आ रही कुछ
किरणों की मधु जालियों पर ।
चल रही सिंधु किनारे
लहरों से कुछ गीत पाने ।
जो सुनाएँ उसको मानव
के फसाने नए पुराने ।

वायु के चंचल थपेड़े
उसका आंचल हैं लहराते ।
बादलों के दल घनेरे
उसको आ-आ के सताते ।
बिजलियां गिरती हैं उसपर
अपना आतंक जमाने ।
दुष्टता हिंसा की आंधी
चल रही उसको मिटाने ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनैतिक पिशाचिनी भी
चील बन मंडरा रही है ।
अपनी ध्वंसक शक्तियों से
उसको कुछ धमका रही है ।
बढ़ रहीं सब असुर वृत्तियाँ
उसका कोमल गात जलाने ।
उठ रहा इक सर्प भयानक
उसको अपना गरल पिलाने ।

पर न होगी जीत उन की
हार जायेंगी वे सारी ।
बन के देवी आई है वह
सुख लुटाने राज-दुलारी ।
उसकी अद्‌भुत शक्तियों को
कौन, जो जाने-पहचाने ।
वह बनादे मरूस्थलों को
पल में सुंदर खेत सुहाने ।

मेरा सपना टूटा

दूर, बहुत दूर,
आमों पे बैठी कोयल ने कहा -
''देख, कोई आया ! देख कोई आया ! तेरे सपनों का राजा''।
सुन, आमों तले लेटी मलका-हुसन ने ली अँगड़ाई ।
देख, चाँद-सा मुखड़ा और मस्त निगाहें
आकाश हिला धरती थर्राई ।
''मेरे मन में आ, मेरे मन के राजा'' ।
यूं ज़ोर से मलका हुसन ने आवाज़ लगाई ।
मैं चौंक उठा, मेरा सपना टूटा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो जीवों के सहारे

पागल बनकर क्यों तू रोता बैठा सिंधु किनारे ?
डूब गए न, चमक उठेंगे, तेरी आशाके तारे ।

रातें ढलतीं, दिन हो जाता,
उड़ता पंछी, पिऊ पिऊ गाता,
चाँद से फैली चाँदी को तू
मन में क्यों विचारे ?

पतझड़ पीछे मधुऋतु आती
सुख-सौंदर्य के बिन्दु गिराती,
इंद्रधनुष के सतरंगों को
पल-पल क्यों निहारे ?

रवि मुस्काता नभ खिल जाता
बिछुड़ा साथी फिर मिल जाता
दुनिया चलती आई पगले
दो जीवों के सहारे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व-परी

वह विश्व परी मंझधार खड़ी पल-पल हिचकोले खाती है ।
लहरों की लपेटों में आ-आ कुछ गीत घिनौने गाती है ।

मानव ने अत्याचारों से
अपने हिंसक व्यापारों से
उसको लूटा औ भ्रष्ट किया
पापों से स्वेच्छाचारों से
वह विकाल-वासना-मूर्त्ति बन
मानव को डसने आती है ।

मानव ने उसको कब छोड़ा
कब उससे नाता है तोड़ा
उसके सुंदर कोमल तनु को
लोहे की चोटों से फोड़ा
पिघले लोहे की लाली बन
दुनिया को जलाने आती है ।

मानव ने उसको नग्न किया
मानव ने उसको भग्न किया
तृप्ति की मदिरा पिला-पिला
मस्ती में उसको मग्न किया
मस्ती के झोंको से रह-रह
मानव को सिझाने आती है ।

मानव तू होश संभाल ज़रा
मानव तू जोश संभाल ज़रा
प्यासी लिप्सा की सीमा त्यज
तू अपना रोष संभाल ज़रा
तेरी सोने की नैया को
सागर में डुबोने आती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब याद तुम्हारी आए साथी

नयनों से छम-छम नीर बहे
जब याद तुम्हारी आए साथी ।
उर की गगरी छल-छल छलके
जब याद तुम्हारी आए साथी ।

जीवन की लम्बी यात्रा में
घनघोर घटा जब घिर आती
उर की सूनी सरिता से फिर
गम की लहरें रो-रो गातीं ।

वे क्षणिक जुदाई की घड़ियां
मोती-सी झरती वे लड़ियां
पलकों की सूनी सेज ऊपर
रह-रह कर सपना बन आतीं ।

वह मधुर राग-रंगों की दुनिया
सुंदर कोमल साज़ों की दुनिया
मन की वीणा को झंकृत कर
गीतों की लय में लहराती ।

बीते युग औ बीती बातें
सुख के आँसू हंसती श्वासें
नित उर की सूनी डाली पर
बन मधुर बेकली छा जातीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घंटा घर

वह खड़ा चौक में घंटा घर
यौवन उसका है बीत गया
बावन वर्षों की आयु में
उसका नहीं है कोई मीत नया ।

उसके सब उसको भूल गए
अपने ही मद में झूल गए
वह मूक-दृष्टि से ताक रहा
उन सबको पल-पल खड़ा-खड़ा ।

वे नीचे से उठ-उठ जाते
पर कभी न उसको सहलाते
ग़म की बातें कुछ पूछ-पूछ
धीरज न उसको कभी बंधाते ।

तांगे, मोटर, जन-मन का रव
उसका सुख-शांति हर लेता
पर मूक बना वह मानव को
न गाली उपालम्भ देता ।

उसने देखे हैं युग कितने
काले, गोरे, सुख-दुख, सपने
आंधी, वायु, वर्षा में सदा
प्रकृति से टक्कर लेता रहा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रवि ताप उसे न गला सका
पथ से अपने न हिला सका
नभ छूती उसकी बुरजी को
अपने बल से न गिरा सका ।

बुरजी उसकी चैलेंज देती
मानव को ऊपर उठने का
आंधी, तूफान, वर्षा ओले
सबको हंस-हंस कर सहने का ।

उसकी साथी उसकी घड़ियाँ
देतीं गीतों की कुछ कड़ियाँ
जब सवा डेढ़ पौने बजते
अथवा घंटे टन्-टन् करते ।

टन्-टन् की ध्वनि देती संदेश
मानव को आगे बढ़ने का
अणु बम के इस भयानक युग में
जन-मन को सुख से मढ़ने का ।

पर मानव क्या तू सुनता है
टन्-टन् करती इन घड़ियों को
जो जोड़ रहीं पल-पल तेरे
गीतों की टूटी लड़ियों को ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नि:स्वार्थ भाव से बिता रहा
अपना जीवन मानव-सेवा में
है कवि एक, दूसरा नहीं
शामिल उसके इस जनहित में ।

कवि देख रहा उसके तन पर
झुरियां, टूटी-फूटी ईंटें
नीले-पीले सिनेमा पोस्टर
वर्षा की मटमैली छींटें ।

देख, देख वह सोच रहा
जीवन की ढली अवस्था को
चलता-चलता वह खोज रहा
जीवन की नयी व्यवस्था को ।

जीवन की नयी व्यवस्था में
कितने होंगे संगी-साथी
टूटे-फूटे घंटा-घर की
तसवीर खड़ी है बतलाती ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं अकेला

मैं अकेला, दूर साथी, पथ मेरा दिखला रहा ।
चाँद नभ में चाँदनी से बिछुड़ा मन तरसा रहा ।।

लहर गाती, पास आती, गहरे सागर नीर में,
मैं लहर से दूर बैठा, ढलता मन सहला रहा ।

प्रात होती, अश्रु ढोती, उगते किसलय तीर में,
मैं उषा से दूर बैठा, जलता मन नहला रहा ।

रात आती, नींद लाती, जुगनुओं की भीर में,
मैं निशा से दूर बैठा, गलता मन मचला रहा ।

राह सूनी, आशा दूनी, झूठे जग की पीर में,
मैं दिशा से दूर बैठा, ढलता मन बहला रहा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाँद कहता

चाँद कहता पास आजा तुझको तेरा साथी दूँगा ।
बादलों की ओट से मुसकाता कहता साथी दूँगा ।

साथी तेरा सो गया जो, वादियों में खो गया जो,
पर्वतों की ओट से लाकर मैं तेरा साथी दूँगा ।

साथी तेरे मन में जिसने दीप जलाए जगमगाए,
तारों की दुनिया से लाकर तुझको तेरा साथी दूँगा ।

रात आए दिन हो जाए साथी तेरे पास आए,
साथी साथी क्यों पुकारे, साथी तेरा तुझको दूँगा ।

बावलों सा हो रहा क्यों, पागलों सा रो रहा क्यों ?
विरह के हाथों से लाकर तुझको तेरा साथी दूँगा ।

साथी मन का मीत तेरा, साथी जीवन गीत तेरा,
सपनों के महलों से लाकर, साथी तेरा तुझको दूँगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई गीत सुनाता आजाए

जीवन की लम्बी राहों में कोई गीत सुनाता आ जाए ।

सुख के बादल फिर जाने पर,
दु:ख के बादल घिर आने पर,
जगती-बुझती सी आहों में कोई प्रीत सिखाता आ जाए ।

मस्तानों के रह जाने पर,
दीवानों के आ जाने पर,
काली नागिन-सी रातों में कोई दीप जलाता आ जाए ।
कलियों के हिलने-डुलने पर,
कुसुमों के घूँघट खुलने पर,
रँगीन हुई सी प्रातों में कोई बीन बजाता आ जाए ।

आशा की झीनी डाली पर,
सुख दु:ख की भरी प्याली पर,
गोरी प्यारी सी बातों में कोई जीत दिखाता आ जाए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रँगीन मोती

सूने सूने पल जब आते
मन गीत सलोने गाता है
पलकों की सूनी गगरी से
मोती रँगीन बहाता है ।

मोती बनते मिटते रहते
धूलि-सागर में है बहते
धूलि-सागर के कण कण में
रे क्यों उनको ढुलकाता है ?

ढुलकन उनकी गहरी गहरी
मानस में ज्यों लहरी लहरी
मानस की लहरी लहरी में
रे क्यों उनको छलकाता है ?

छलकन उनकी पीड़ा देती
पीड़ा क्रीड़ा को सह लेती
क्रीड़ा की मंजुल व्रीड़ा में
रे क्यों मन को बहलाता है ?

बहलाव नहीं आसान अरे
मोती हैं ये श्मशान अरे
श्मशान के पलने में पलकर
रे क्यों ग़म को सहलाता है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन सरिता

जीवन सरिता बहती आई, युग युग बहती जाए रे !

बूड़ रही हो इस सरिता में तुम अनजानी-सी सुकुमार,
चंचल लहरें उफनाती हैं देख पिया का लाड दुलार ।
लहरें उफनातीं ढल जातीं पर तू जीवन से ना हार,
इसी भेद को भर झोली में कर ले जीवन से श्रृंगार ।
श्रृंगारी जीवन की नौका, सुख-दु:ख सहती जाए रे ।

विगत स्मृति के नीड़ बना उनमें कर ले अपना आवास,
नव जीवन के कुंज-निकुंजों में कर ले सुंदर मधु हास ।
पिय की सस्मित मुस्कानों से कर तापों को अपना दास,
क्रीड़ा की पीड़ा से मीलित क्षण में भी कर हास-विलास ।
हास-विलास की चुनरी उजली फुर-फुर उड़ती जाए रे ।

हम सब भी आए जीवन में तेरे खिलते फूल समान,
चुभ जाएंगी स्मृतियाँ तेरी हिय में तीखे शूल समान ।
कौन कहे कब वे मिलती हैं अपनी नदी से कूल समान,
उर में उनको रखना पगली उड़ें न सूखी धूल समान ।
सूखी धूलि में पंछी बन याद चहकती जाए रे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी आत्मा

युग -युगों के प्यार से पीड़ित है मेरी आत्मा ।

मैं ने कब बंधन बनाया
प्यार को कब था सजाया
अपनी दुनिया में निरत रह
प्यार खुद अपना लुटाया

दृग-दृगों की धार से भीगी है मेरी आत्मा ।

भीगती पलकें दुलारें
खोया प्यार अपना पुकारें
दे-दे थपकी आंसुओं को
प्यार की डोली हुलारें

वेदना के भार से हुलसित है मेरी आत्मा ।

प्यार का गौना क्या आया
हार का संदेश लाया
मन-विधुर के अंगना पर
हर्ष औ अवसाद छाया

प्यार की इस हार से कुंठित है मेरी आत्मा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यार का अनमोल मोती

मैं चला पथ पर अकेला
कौन मेरे साथ आया ?

राह मेरी दूर जाती
पास मंजिल है बुलाती
किसकी यह आवाज़ पीछे
आती मेर गुनगुनाती

चल रहा दुनिया का चक्कर
कौन किसके हाथ आया ?

शून्य है दुनिया का डेरा
शून्य है मेरा बसेरा
पर न शून्य इस जगत् में
हा, प्रिये वह प्यार तेरा

प्यार का अनमोल मोती
कब किसी के पास आया ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाया हर्ष अपार

छाया हर्ष अपार,
चतुर्दिश, छाया हर्ष अपार ।

नगर-नगर की डगर-डगर पर
लहरे तिरंगा हार ।
दिल्ली बनी नवेली दुलहिन,
कर सोलह श्रृंगार ।
भर आईं जनता की आंखें,
सुन बापू की पुकार ।
देश को ले चल आगे, न इसे,
छोड़ बीच मंझधार ।
छाया हर्ष अपार,
चतुर्दिश, छाया हर्ष अपार ।
मंगल ध्वनियां, उड़-उड़, नभ से,
करतीं मधुर दुलार ।
नैया हमारी बीच भंवर में,
बचा ले खेवनहार ।
सुन ले पुकार जग के नाविक,
ले चल जीवन पार ।
लौट न आएं उस दुनिया से,
फिर से तेरे द्वार ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बापू के प्रति

आये थे तुम जग में बापू
सबका सुख-संवेदन लेकर
चले गये, हा, चले गये तुम
सबको दुःख-अवचेतन देकर ।

आये थे तुम जग में बापू
सबको सुंदर गीत सुनाने
चले गये, हा, चले गये तुम
बन कर सबके मीत सुहाने ।

दो मुक्तक

१

तेरी मुस्कान पे फिदा होते सौ चाँद सितारे,
तेरी मुस्कान पे जीते सौ ग़म के मारे,
या इलाही क्या माजरा तेरे तौसीक का
जिंदगी चलती आई सुबह-शाम के सहारे ।

२

मधुऋतु की हार रात सुहानी होती है
प्रिय की हर बात कहानी होती है
जो दीपक की लौ पर तिल-तिल जले
वह शलभ की सर शार जवानी होती है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या....RA 6१.५.... आगत संख्या...127878

स्मालु-R

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए अन्यथा ५० पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

127878 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		18/7/11
Class No.		5/8/11
Cat No.		
Tag etc.	अंकित अपि	28/11/11
E A R		

RA पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
891.4
विषय संख्या स्याल-दि आगत नं० 127878
लेखक स्याल, सुखदेव कुमार
शीर्षक दिल की धड़कन
(कविता संग्रह)

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखदेव कुमार स्याल

जन्म तिथि	:	28 मार्च सन् 1931
शिक्षा	:	एम.ए. (हिन्दी), एस.सी.डी. गवर्नमैंट कालेज, लुधियाना।
सेवा कालावधि	:	सन् 1955 से लेकर सन् 1992 तक
सेवाकाल में प्राप्त पद	:	सहायक संपादक, वीर अर्जुन, जालंधर। प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष आर्यकालेज, लुधियाना एवं आर.के. आर्य कालेज, नवांशहर। प्रभारी-आर्य कालेज महिला विभाग, लुधियाना। प्रिंसिपल-आर.के. आर्य कालेज, नवांशहर। सदस्य, सिंडिकेट एवं सीनेट, गुरूनानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर। सदस्य, एकेडेमिक काऊंसल, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़। एडमिनिस्ट्रेटिव आफ़िसर, एन.सी.सी बटालियन, मुम्बई।
सेवानिवृत्ति उपरान्त पद-ग्रहण	:	संपर्क अधिकारी, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालंधर। प्रशासक आर्य कालेज, लुधियाना। उप-प्रधान, प्रबंध समिति, आर्य कालेज, लुधियाना। प्रशासकीय सलाहकार, डी.एम.कालेज, मोगा। प्रशासकीय सलाहकार, डी.एम. कालेज आफ़ एजुकेशन, मोगा। प्रशासकीय सलाहकार, आ.ग.सी.सै. स्कूल, मोगा। प्रशासकीय सलाहकर आर्य माडल हाई स्कूल, मोगा। मंत्री, प्रबंध समिति, आर्य कालेज, लुधियाना।
प्रकाशित रचनाएं :		इला चन्द्र जोशी और उनके तीन उपन्यास (समीक्षात्मक ग्रंथ) दिल की धड़कन (कविता-संग्रह), पत्र-पत्रिकाओं में लेख एवं कहानियां।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar